CC-3

M.A. Pre-
III Paper

5

उपांग साहित्य का विवेचन करें।

अंगों के समान उपांग भी बारह हैं, ये भी आगमिक साहित्य में सम्मिलित हैं।

(1) **औपपातिक** — इस उपांग में बताया गया है कि नाना भावों, विचारों और साधनाओं पूर्वक मृत्यु प्राप्त करनेवाले प्राणियों का पुनर्जन्म कहाँ होता है। इस ग्रंथ में 43 सूत्र हैं। इसमें नगर, चैत्य, राजा एवं रानियों का सुन्दर वर्णन किया गया है चम्पा नगरी का अलंकारिक वर्णन है। तथा इसमें धार्मिक और नैतिक मूल्यों की स्थापना की गयी है।

(2) रायपसेणिय (राजप्रश्नीय) इस उपांग की गणना प्राचीन आगमों में की जाती है। इसमें दो भाग हैं। और कुल 217 सूत्र हैं। इसमें राजा प्रदेशी द्वारा किये गये प्रश्नों का केशी मुनि द्वारा समाधान प्रस्तुत किया गया है। इस उपांग के प्रथम भाग में सूर्याभदेव का वर्णन है और दूसरे भाग में इस देव के पूर्व जन्मों का वृतान्त है। इसमें स्थापत्य, संगीत और नाट्यकला की दृष्टि से अनेक तत्त्वों का समावेश है। इसमें 32 प्रकार के नाटकों का उल्लेख किया गया है।

(3) जीवाभिगम → इस उपांग में गौतम गणधर और महावीर के प्रश्नोत्तर के रूप में जीव और अजीव के भेद-प्रभेदों का विस्तृत वर्णन है। इसमें 9 प्रकरण और 272 सूत्र हैं इसमें द्वीप और सागरों का विस्तार पूर्वक वर्णन पाया जाता है तथा इसमें प्रसंगवश रत्न, आभूषण, भवन, वस्त्र, अलंकार एवं मिष्ठानों का महत्वपूर्ण वर्णन है।

(4) पण्णवणा (प्रज्ञापना) → इस उपांग में 36 पद-परिच्छेद हैं जिसमें जीव के संबंध रखनेवाले प्रज्ञापना, स्थान, स्थिति, कषाय, इन्द्रिय, लेश्या, कर्म, उपयोग वेदना आदि विषयों का अच्छा निरूपण किया गया है जो स्थान अंग साहित्य में भागवती सूत्र का है वही स्थान उपांग में इस ग्रंथ का है।

(5) सूरियपण्णत्ति (सूर्यप्रज्ञप्ति) इस उपांग में 20 पाहुड और 108 सूत्र हैं इसमें सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों की गतियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। प्रसंगवश द्वीप और सागरों का निरूपण भी आया है इसमें प्राचीन ज्योतिष सम्बन्धी मूल मान्यताएँ संकलित हैं इसके साथ ही सूर्य के उदय और अस्त परिस्तुत वर्णन है।

(6) जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति → यह उपांग दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध पूर्वार्द्ध में चार और उत्तरार्द्ध में तीन परिच्छेद हैं। तथा इसमें 176 सूत्र हैं। प्रथम में चारों परिच्छेद में जम्बू द्वीप, भरत क्षेत्र तथा उसके पर्वतों, नदियों का निरूपण किया गया है। इस उपांग में ऋषभदेव का चरित्र विस्तृत रूप में वर्णित है। ऋषभ ने 72 प्रकार के कलाएँ पुरुषों के लिए एवं 63 प्रकार के कलाएँ महिलाएं के लिए उल्लेख किया है।

Scanned with CamScanner

(7) चन्द्र प्रज्ञप्ति → इसका विषय सूर्य प्रज्ञप्ति के समान ही है, इसमें 20 प्राभृत हैं। जिसमें चन्द्र के परिभ्रमण, गतियाँ, विमान आदि का निरूपण है। इसमें चन्द्र की प्रतिदिन की भोजनात्मिका गति का निरूपण है। इस ग्रंथ में चन्द्रमा को स्वतः प्रकाशमान बताया गया है। इसके घटने बढ़ने का कारण राहु ग्रह है।

(8) कप्पिया (कल्पिका) इस उपांग में 10 अध्ययन हैं। प्राचीन मगध का इतिहास जानने के लिए यह उपांग अत्यन्त उपयोगी है। इसमें मगध नरेश श्रेणिक एवं उसके वंशजों का विस्तृत वर्णन है वैशाली नरेश चेटक के साथ अजातशत्रु की युद्ध का वर्णन भी है। इसमें सामाजिक आख्यानों का वर्णन भी किया गया है।

(9) कप्पावडंसियाओ → इसमें श्रेणिक के दस पौत्रों की कथाएँ हैं जिन्होंने अपने सत्कर्मों द्वारा स्वर्ग प्राप्ति किया था। इन कथाओं में उनके पूर्व कर्म की सन्तति मात्र का ही उल्लेख किया है। इसमें पौराणिक कथाओं के माध्यम से लोक कथाएँ बनाने का प्रयास किया गया है। इसके धर्म पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है।

(10) पुप्फिया (पुष्पिका) इस उपांग में दस अध्ययन हैं तीसरे अध्ययन में सोमिल ब्राह्मण की कथा है। इस ब्राह्मण की तपस्या का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। इस उपांग में स्वसमय एवं परसमय के ज्ञान प्राप्त करने हेतु दसों कथाओं का संकलन किया गया है कथाओं में कुतूहल तत्व का समावेश भी है।

(11) पुप्फचूला → इस उपांग में भी 10 अध्ययन हैं जिसके माध्यम से धार्मिक प्रवृत्ति में लिप्त कथाओं का संग्रह है। जिन्होंने धर्म साधना द्वारा स्वर्गलाभ एवं दिव्य सम्पदाएँ प्राप्त की है उनका भी वर्णन सुन्दर ढंग से किया गया है। इसमें बताया गया है कि स्वर्ग के देव अपने अतुल वैभव के साथ भगवान महावीर की वन्दना के लिए आते हैं।

(12) वह्निदशा) इस उपांग में 12 अध्ययन हैं जिसमें द्वारिका के राजा कृष्ण वसुदेव के वर्णन के साथ वृष्णि वंशीय बारह राजकुमारी के दीक्षित होने का वर्णन है। इसमें कथातत्व की अपेक्षा पौराणिक तत्वों का प्राचुर्य है। इस उपांग में तीर्थंकर अरिष्टनेमि का वर्णन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner